तृतीय अध्याय:

(ई) "नाटक का उद्देश्य"

नाटक का अन्तिम तत्व है उद्देश्य। प्रत्येक साहित्यकार अपनी रचना का सृजन किसी न किसी उद्देश्य से करता है। भले ही क्रम में उद्देश्य को नाटक का अन्तिम तत्व बताया हो, पर नाटककार की मूल प्रेरणा इस उद्देश्य में निहित होती है। नाटक की सफलता या असफलता उसमें निहित उद्देश्य पर निर्भर रहती है।

भारतीय आचार्यों ने "रसानुभूति करना" नाटक का उद्देश्य माना, तो पाश्चात्य विद्वानोंने उद्देश्य को नाटक का अनिवार्य तत्व माना। वे उद्देश्य को स्पष्ट करने के लिए नाटकमें आन्तरिक और बाह्य संघर्ष को महत्व देते है। नाटककार का उद्देश्य पात्रों के संवाद तथा उनके क्रिया कलाप से स्पष्ठ होता है।

डॉ. कृष्णदेव शर्मा नाटक रचना के मूलमें निम्न उद्देश्य स्वीकार करते है।

१) किसी नैतिक आदर्श की स्थापना करना।

२) किसी देश अथवा जाति के उत्थान पतन का चित्र प्रस्तुत करना।

३) यथार्थ एवं आदर्श का समन्वय प्रस्तुत करना।

४) सामाजिक (दर्शक या पाठक) के हृदय में रति, उत्साह, करूणा, विस्मय आदि मनोवेगों को जागृत कर श्रृंगार, वीर आदि रसोमें उन्हें निमग्न करना।

५) जीवन से संबंध समस्याओं की व्याख्या और उनका समाधान प्रस्तुत करना।

६) इनके अतिरिक्त समसामयिक समाज की आवश्यकतानुसार वह प्रचलित जीवन दर्शनों का समन्वय करके एक नए जीवन दर्शन का प्रचार कर सकता है।

इस तरह नाटक का उद्देश्य तत्व स्पष्ठ होता है। डॉ. रामगोपाल शर्मा "दिनेश" जी के पृथ्वीराज नाटक का अनुशीलन करते समय उसके उद्देश्य तत्व को प्रथम लिया गया है। इसका कारण यह है, कि यह नाटक उद्देश्य की दृष्टि से महत्वपुर्ण है। कथावस्तु और पात्रों का निर्माण एक निश्चित उद्देश्य को लेकर हुआ है। अत:क्रमबध्दता में परिवर्तन करके उद्देश्य को प्रथम स्थान देने का यह भी एक कारण है, कि अगर हम नाटक के उद्देश्य को पहले जान लेंगें, तो अन्य नाटकीय तत्व आसानी से समझ सकते है।

डॉ. "दिनेश" जी ने "पृथ्वीराज" नाटक के उद्देश्य के संबंधमें भूमिका मे कहा है – "इस नाटक में सहज मे कुछ उद्देश्यों की अभिव्यक्ति हो गई है। जैसे – कुमारी कन्याओं के यौवनपर कुदृष्टि डालनेवाले युवकों का तिरस्कार, शरण आये हुए वीरों की रक्षा और यथाशक्ति सहायता, दस्यु प्रवृत्ति का विरोध, देश भक्तों एवं मातृभूमि के उध्दारकों का सम्मान तथा वीरता एवं पराक्रम की प्रतिष्ठा।

आशा है, यह ऐतिहासिक नाटक पाठकों के मनोरंजन और संस्कार परिष्कार की पर्याप्त सामग्री प्रदान करेगा।"[१]

नाटक के तत्व उद्देश्य के विवेचन के आधारपर अब देखेंगे कि, नाटककार अपने उद्देश्यमें कहाँ तक सफल हुए हैं।

<u>कुमारी कन्याओं के यौवनपर कुदृष्टि डालनेवाले-युवकों का तिरस्कार</u>:

आज की नई पीढी आधुनिकता और पाश्चात्य प्रभाव के कारण संस्कृति की अपेक्षा फॅशन की ओर अधिक आकर्षित है। उसके नैतिक मूल्य परिवर्तित हुए है। इसीका एक परिणाम यह है, कि प्राय: आज का युवक कुमारी कन्याओं के प्रति बुरी नजर से ही देखता हैं। उनकी दृष्टि में सौन्दर्य देखने की भावना नहीं, बल्कि वासना की हवस है।" शौक – ए – दीदार है तो नजर पैदा कर"

---

१) पृथ्वीराज – भूमिका पृ. ७.८

इसे वे भूल चूके है। आज की युवतियाँ भी बूरी नजर से देखनेवाले युवकों को तिरस्कार की भावना से देखती है और उन्हें इसी दृष्टिकोण से देखना चाहिए क्योंकि, " बुरी नजरवाले तेरा मुँह काला " बात सच ही है।

डॉ. दिनेश नैतिकता को महत्त्व देनेवाले साहित्यकार है। साहित्य द्वारा संस्कार दिलाना उनका उद्देश्य है , जो तारा और सूरजमल के प्रसंग से स्पष्ट किया है। तारा की वीणा के स्वर सुनकर सूरजमल उनके प्रति आकर्षित होता है। तारा के रूप और गुणों की प्रशंसा करता है , तो उस समय तारा सूरजमल को " क्षत्रियत्व हीन व्यक्ति की सन्तान"[१] कह देती है। इससे यह स्पष्ट होता है , कि नाटककार का यह उद्देश्य " पृथ्वीराज " नाटक मे सफल हुआ है।

<u>शरण में आए हुए वीरों की रक्षा और यथाशक्ति सहायता</u> :

भारत की प्राचीन परम्परा है , कि अगर कोई वीर परिस्थिति के कारण किसी की शरण आये, तो सुरक्षा की जिम्मेदारी उसपर है। यथाशक्ति उसे सहायता दिलाना भारतीयों का धर्म है। जिसका पालन भारतीय संस्कृतिमें बराबर होता रहा है। शरण में आये हुए वीर की रक्षा और सहायता करना मानवता है। भारतीय इतिहासमे ऐसे कई उदाहरण मिलते है।

नाटककार ने " पृथ्वीराज " नाटक के द्वारा इसी पुरातन मानवतावादी प्रथा को फिरसे उजागर करने का प्रयास किया है। आज की नयी पीढी प्राचीन मान्यताओं को ठुकरा रही है , जो मानवता के लिए बडा कलंक है। " पृथ्वीराज" नाटक में इसके दो उदा. मिलते हैं - टोक टोडा का राव सुरताण लीला अफगान से पराजित होकर मेवाड के महाराणा रायमल के राज्यमें - बदनौर में जीवन व्यतीत कर रहा है। महाराणा रायमल उन्हें आश्रय देते हैं और बदनौर का जनपद भेंट देते हैं।[२] दूसरा उदा. नादोल का व्यापारी - ओझा देश से निकाले

---

१) पृथ्वीराज , पृ. ४
२) वहीं , पृ. ५२

गये पृथ्वीराज को आश्रय देकर तनमनधन धन से उसकी सहायता करता है[१] और पृथ्वीराज उनकी सहायता से ही अपने देश को गोद्वार के संकट से मुक्त करता है।[२] अत: नाटककारने नयी पीढी को मानवता का सन्देश देकर संस्कृति की रक्षा की है।

" दस्यु - प्रवृत्ति का विरोध " :

अपने जीवन की अभिलाषा और सुख की लालसा के कारण आज मनुष्य दुसरों की परवाह नहीं कर रहा है। अभाव की पूर्ति करने के लिए वह बूरें रास्तों पर चल रहा है। इसीका परिणाम है दस्यु प्रवृत्ति। आज भारत के सामने आतंकवादियों की समस्या है , जो एक तरह से दस्यु प्रवृत्ति है। निरपराध सामान्य जनता को लूटना, उनपर अत्याचार करना, डाके डालना, हत्या करना- यह सब दस्यु प्रवृत्ति नहीं तो और क्या है ? आज सरकार की ओरसे इसका मुकाबला हो रहा है।

डॉ. दिनेश जी ने " पृथ्वीराज " नाटक में दस्यु प्रवृत्ति का चित्रण करके, उसका समाधान भी प्रस्तुत किया है। महाराणा रायमल के मेवाड राज्य का एक इलाका गोद्वार हमेशा से दस्यु प्रवृत्ति का शिकार बना है। दस्यु दल सामान्य जनता को लूटकर शक्ति बढाने का कार्य करता है और अपनी शक्ति बढनेपर अपने आपको स्वतंत्र घोषित करते हैं।[३] महाराणा रायमल शांतिप्रिय होने के कारण युध्द करना नहीं चाहते। जिससे दस्यु प्रवृति को बढावा मिला है। महाराणा रायमल उससे निश्चित भी नहीं है। वे शांति के रास्ते से और जनता की सहायता से इस समस्या को सुलझाना चाहते है। महाराणा अपने मंत्री से कहते हैं -

---

१) पृथ्वीराज , पृ.७०
२) वहीं . पृ. ७७
३) वही, पृ. १२

SHIVAJI UNIVERSITY LIBRARY

" भीतरी बाहरी शत्रुओं के समाप्त करने के लिए हमें प्रजा की शक्ति को दृढ बनाना चाहिए। उसी की शक्तिपर शासन की शांति और सुरक्षा निर्भर है। यदि प्रजा भोजन-वस्त्र के लिए भटकेगी, तो शासन की शक्ति से हम आक्रमण-कारियों और अशांति फैलानेवालों का मार्ग नहीं रोक सकते। "[१]

अत: स्पष्ठ है, कि दस्यु प्रवृत्ति जैसी समस्या का विरोध शासन और जनता दोनों मिलकर ही कर सकते है और शासन की ओर से सुरक्षित और निश्चित होनेपर ही जनता शासन की सहायता कर सकती है। अगर डॉ. दिनेश जी के ये विचार सभी भारतीयोंतक और शासन के पास पहूँचे , तो आशा की जा सकती है , कि आज जो आतंकवाद की समस्या भारतमे है वह समाप्त हो सकती है।

<u>देशभक्तों एवं मातृभूमि के उध्दारकों का सम्मान</u> :

आज समाज बदलते हुए सामाजिक मुल्यों को प्रधानता दे रहा है। पूराने सामाजिक मूल्य परिवर्तित हो रहे है। आज के समाज की यह दु:खान्त कथा है , कि आज समाज उपयोगी कुछ पूराने मल्य परिवर्तित हो रहे हैं । जिससे यह कहना पडता है , कि " आज की पीढी आधुनिकता के साथ साथ चलकर एक ओर उन्नति कर रही है , तो दूसरी ओर पुराने मुल्यों को तोडकर विनाश की ओर जा रही है। देशभक्ति की भावना भी आज एक पूरानी मान्यता मानी जा रही है। समाज का देशभक्तों के प्रति देखने का दृष्टिकोण बदला है।

डॉ. दिनेश इतिहास का उदा. देकर नयी पीढी को दिशा दिखाना चाहते हैं।"पृथ्वीराज " नाटक का मूल स्वर देशभक्ति से प्रेरित पृथ्वीराज की वीरता का चित्रण करना है।महाराणा पृथ्वीराज की उदण्डता देख उन्हे देश से निर्वासित करते है , लेकिन उस समय पृथ्वीराज कहता है – " मै हर प्रकार का दण्ड पाने

---

१) पृथ्वीराज , पृ. १४

के लिऐ तैयार हूँ, किन्तु मातृभूमि की रक्षा से मुख नहीं मोड सकता।"[१] यहाँ उनकी देशभक्ति नजर आती है। वह अपनी शक्ति और वीरता के बलपर गोढार की जनता को दस्यु दल के अत्याचार से बचाता है, सुरताण के टोडा प्रदेश को मुक्त करके दिलाता है और मेवाडपर हुए मालवा के आक्रमण को रोकता है। उनके मातृभूमि के प्रेम को देख महाराणा रायमल उसका दण्ड समाप्त करके सम्मान के साथ देशमें बुलाते हैं।[२] अत: यह स्पष्ट है, कि आज भी देशभक्तो एवं मातृभूमि के उध्दारकों का उचित सम्मान होना चाहिए।

" वीरता एवं पराक्रम की प्रतिष्ठा ":

समाज की उन्नति और देश की रक्षा वीरता के कारण होती है। जिस देशमें वीर और पराक्रमी युवकों की कमी नहीं है, वह देश कभी पराजित नहीं होता। लेकिन आज वीरता का उपयोग समाज या देश के कल्याण में न होकर अन्य बातों में ही हो रहा है। आज की युवा पीढी अपना पराक्रम गलत दिशा में दिखा रही है।

डॉ. दिनेश " पृथ्वीराज " नाटक के द्वारा वीरता और पराक्रम को सही दिशा दिखाकर समाजमें उसकी प्रतिष्ठा निर्माण करने का प्रयास किया है। महाराणा के तीनों पुत्रों की वीरता देख राव सुरताण कहते है - जो वीरता गृह कलह को जन्म दे, वह वीरता नहीं रह जाती।"[३] नाटकमें तारा और पृथ्वीराज की वीरता और पराक्रम की चर्चा मिलती है। अन्त में नाटककारने इन दोनों को विवाह सूत्र में बांधकर सारे विजय का श्रेय उन्हें ही दिया है। उन दोनों की प्रतिष्ठा बढाई है।

---

१) पृथ्वीराज, पृ. ४७
२) वहीं, पृ. ८२ - ८३.
३) वहीं, पृ. ३२.

निष्कर्ष :

उपर्युक्त विवेचन के आधारपर " पृथ्वीराज " नाटक के उद्देश्य के बारेमें यही कहा जा सकता है , कि नाटककार भूमिका में व्यक्त किये अपने उद्देश्यों को नाटकमें बडी सफलता से चित्रित किया है। " ऐतिहासिक नाटक का उद्देश्य अतीत के गौरवमय भाव चित्रों या दृश्यों द्वारा आदर्श की स्थापना करना होता है। "[१] इस डॉ. गिरीश रस्तोगी के विचारों के अनुरूप डॉ. दिनेश जी ने अतीत का एक अत्यंत उज्वल आदर्श समाज के सामने प्रस्तुत किया है। तो " नाटकों का सबसे बडा उपयोग नैतिक उन्नति और सामाजिक कल्याण में होता है। " [२] इस श्याम सुन्दर-दास के विचारों का नाटकमें चित्रण किया है , जिससे संस्कार सम्पन्न नयी पीढी तैयार हो सकती है।

---

१) हिन्दी नाटक : सिध्दांत और विवेचन , पृ. ५०

२) वहीं , पृ. ५०